धुआँ

नादान हैं लोग इस आलम के
हकीकत को अनदेखा जो कर रहे हैं
धुंधली अपनी हर आस को पाने की कोशिश में
सचाई को कर रहे वो धुआँ हैं

गिरा कर फायदों के परदे अपनी आँखों पर
नज़रअंदाज़ फकीर की हर आस कर रहे हैं
जेबों को अपनी भारी कर
सचाई को कर रहे वो धुआँ हैं

इन काफ़िरों से ही तो चलती है जंग-ए-सियासत
बैठ के घरों से अपने जो कर रहे हैं हुकूमत
काम इनका यूँ तो देश को चलाना है
मगर सचाई को कर रहे वो धुआँ हैं

दूसरों का इस्तेमाल करते हैं बिना किए शर्म
ना इनका कोई अपना पराया, नाही है कोई धर्म
सहारा हर कदम पर झूठ का लेते हैं
और सचाई को कर रहे वो धुआँ हैं